प्रेरणा है भक्तराज श्री हनुमान जी की
आशीष हैं सभी देवी देवताओं का

फलस्वरूप

महाराजा मणिकुण्डल जी
के जीवन दर्शन को झलकाती
यह चित्रावली

समर्पित है

ममता की साक्षात देवी, करुणामयी

माँ गोदावरी गुप्ता

को

**जिनसे न केवल जन्म और संस्कार वरन्
आशीष और दुलार पाकर मैं उनका शाश्वत ऋणी हूँ
समर्पण की अनुभूति ले मैं आज दैविक आनन्द
का अनुभव कर रहा हूँ।** – *उमाशंकर गुप्त*

रामभक्त अयोध्यावासी वैश्यों के आदि महापुरूष

महाराजा मणिकुण्डल जी से सम्बन्धित प्रमुख तथ्य

1- मणिकुण्डल जी का जन्म महाराजा दशरथ के शासनकाल में अयोध्या के नगर श्रेष्ठि मणिकौशल (पिता) एवं शाकम्भरी (माता) के यहाँ पौष पूर्णिमा को हुआ था।

2- रामवनगमन के समय अयोध्या से चले बालक मणिकुण्डल जी की किशोरावस्था भौवन नगर में व्यतीत हुई।

3- मणिकुण्डल जी को उनके मित्र गौतम ने जिस स्थान पर अंगहीन किया था, वह स्थान पुराणों में चक्षुस्तीर्थ के नाम से उल्लिखित है। यहां विभीषण एवं उनके पुत्र वैभीषणि ने विशल्यकरणी महौषधि एवं दिव्य मंत्रों द्वारा मणिकुण्डल जी को सर्वांग सुन्दर रूप प्रदान किया था।

4- महापुर के राजा महाबली की पुत्री महारूपा का मणिकुण्डल जी ने इन्ही मंत्रों एवं विशल्यकरणी महौषधि से उपचार किया था। तदुपरान्त यही महारूपा उनकी पत्नी बनी और वे महापुर के राजा बने। राजा बनने के पश्चात् वे पत्नी सहित श्री राम के दर्शन करने अयोध्या गये थे।

5- आपके शासन काल में राज्य में साहित्य, संस्कृति, संगीत काव्यकला युद्धकला वास्तुवेद अभियान्त्रिक एवं ज्ञान विज्ञान का समुचित विकास हुआ।

6- मणिकुण्डल जी के पश्चात् उनके पुत्रों मणि एवं मणिक ने सफलतापूर्वक राज्य किया।

7- मणिकुण्डल जी को तिल, संतरा एवं खीर विशेष प्रिय थे।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1- ब्रह्मपुराण

2- वैश्याणाम गौरवः

3- श्री अयोध्यावासी वैश्यों का इतिहास

4- वैश्य समुदाय का इतिहास

श्री मणिकुण्डल चित्रावली

सरयू तट पर श्री अयोध्यानगरी बसी है। अयोध्या नगरी पर महाराजा दशरथ का शासन है। वहां मणिकौशल जी का निवास है। उनके यहां नव शिशु का जन्म हुआ है। साथ ही श्री मणिकौशल को नगर सेठ का पद महाराजा दशरथ द्वारा प्राप्त हुआ है।

पुत्र के जन्म के शुभ अवसर पर माता पिता के साथ नगरवासी भी पुलकित हैं और उन्हें आशीष देने के लिए एकत्रित हुये हैं। दोहरी खुशी के अवसर पर पूरी अयोध्यानगरी में लड्डू बटवाये गये

श्री मणिकौशल जी एवं शाकम्भरी ने शुभ घड़ी नक्षत्र में गुरु वशिष्ठ जी के समीप जाकर बालक का नाम करण करवाया और उनसे से वरदान प्राप्त किया।

रविवार पुष्य नक्षत्र और शुभ मुहूर्त समय घड़ी को देख कर माता सरस्वती के मन्दिर में विद्या अध्ययन हेतु पाटी पूजन करवाया गया जिसमें महामंत्री सुमन्त ने स्वयं आकर मणिकुण्डल को आशीर्वाद प्रदान किया।

बालकपन की चंचलता और खेलने की वृत्ति के कारण बालक मणिकुण्डल पढ़ने पढ़ाने का प्रयास करता है तथा अन्य बच्चों को भी पढ़ाने का रूपक करता है। मेधावी बालक पढने में संलग्न हुआ और शीघ्र ही सभी विद्याओं में पारंगत हो गया।

अयोध्यापुरी में राजा दशरथ के द्वारा श्रीराम को बनवास की आज्ञा दी गई। जिसको जानकर सभी प्रजाजनों में शोक की लहर दौड़ गई। महाराजा दशरथ और प्रजाजनों के लिये शोक के कारण वह रात कालरात्रि के समान भयंकर हो गई थी और बीतने का नाम नहीं ले रही थी।

इस विपत्ति के समय श्री मणिकौशल जी शोकाकुल हो गये कि प्रातःकाल श्री रामचन्द्र जी के चले जाने पर विछोह का दुःसह दुःख मिलेगा। अतः सब काम छोड़ कर घर में निराश होकर बैठ गये।

श्री मणिकुण्डल जी ने पिता जी के दुःख और शोक संतप्त अवस्था देखकर कहा कि एक सभा बुलाइये और सभी बन्धु-बान्धवों से परामर्श करके श्री रामचन्द्र जी की शुभ कामना और प्रभुता बताकर सब मिलकर सर्वसम्मत अच्छी राय कर लें।

श्रीराम जी के बनगमन से शोक ग्रस्त अवधपुरी के स्वजनों की सभा में निर्णय लिया गया कि सबजन मिलकर श्रीराम जी को रोकने के लिए कहें। यदि यह संभव न होतो हम सभी लोग भी उनके साथ ही अपना सभी काम छोड़कर चल दें।

उस रात सभी पुरजन-परिजन यह निर्णय करके घर लौटे और क्षण मात्र के लिए भी नहीं सो सके। उनकी भूख-प्यास सब नष्ट हो चुकी थी। श्री राम पर उनकी दृढ़ आस्था थी।

प्रातः काल गुरू माता पिता को प्रणाम करके घनुष बाण हाथ में लेकर अपने कर्मक्षेत्र वन में चलने को श्री राम तत्पर हो गये। श्री लक्ष्मण जी और श्री सीता जी भी उनके साथ हो गये।

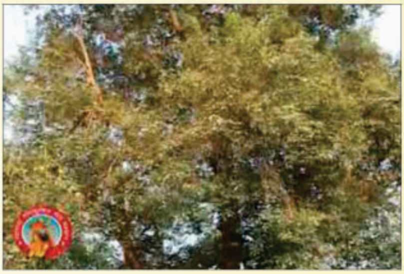

श्री राम जी के वनगमन के अवसरपर मनुष्य ही नहीं पेड़ पौधे प्रकृति और पर्यावरण भी कष्टमय हो गया। उनकी क्षुब्धता से असमय पतझड़ होने लगा। आम नीम पीपल आदि के पत्र टूट कर गिरने लगे। खेतों की मेड़ें टूटने लगी थी और विश्व में सर्वाधिक चंचल अर्थात् मन, हवा एवं पीपल भी दुख के कारण स्थिर हो गये हैं।

इस महान दुःख की घड़ी में सभी फूलों की कलियां मुरझा गई, तितली और भौंरे विचलित हो गये। स्वयं सूर्य भगवान अपने वंशज श्री राम के वनगमन से दुःखी हो सूर्योदय के समय भी सूर्यास्त के समान कम प्रखर हो गये जिससे घाघरा के जलचर सुस्त और बेचैन हो गये। बिना समय के आंधी बादल भयंकर हो उठे, पेंड़ टूटने लगे मोर रोने लगे सभी चर- अचर मनुष्य, पशु पक्षी पेड़ पौधे व्याकुल हो उठे।

अयोध्यावासी अबाल वृद्ध नर-नारी माताएं श्री राम के वनगमन के शोक में विहृवल हो उठे। अति वृद्धजन हाथ में लाठी पकड़ कर चल पड़े कि हम श्री राम को लौट चलने के लिए अनुनय विनय करेंगे और प्रेमपूर्वक उन्हें राजी कर लेंगे कि वे वन न जायं।

अयोध्या नगरी के श्रेष्ठिगण और वैश्य समाज श्री राम से प्रार्थना करता है कि आप ही हमारे युवराज है हमारे प्राण हैं हमें छोड़ कर न जायें इसी विनय और आग्रह के साथ सभी अवधपुरी के व्यापारीगण मार्ग में लेट गये। श्री राम जी को उनके प्रेम ने अचम्भित और करूणा विगलित कर दिया।

इस दृश्य को देख कर प्रभु श्री राम एवं सीता ने अपने से बुजुर्गों को नमन एवं युवाओं को प्यार से पिता की आज्ञा बताई। श्री लक्ष्मण जी ने भी सभी प्रेमीजनों को अपनी असमर्थता और पिता की आज्ञा को समझा कर बताया।।

श्री मणिकुण्डल जी श्री राम जी के अनन्य भक्त थे। उन्होंने विनय करते हुए श्री राम जी से उनके साथ चलने की आज्ञा चाही और कहा कि ऐ भक्तवत्सल! यह सच है कि पिता की आज्ञा का पालन करना आपका धर्म है। उसे आप पूरा करें परन्तु हम सब आपके साथ रहने की इच्छा अपने मन में रखते हैं। कृपया आप हम सबको अपने कर्तव्य करने से न रोकें।

यह कह कर सभी अवधवासी श्री राम जी के साथ चल पड़े उन्होंने कहा कि जहां श्री राम हैं वहीं अयोध्या है। राम के साथ हमारे लिये जंगल भी अयोध्या है जहां वह नहीं है वहां कुछ बचा ही नहीं अतः यहां अब हमारा कोई काम नहीं रह गया। इसी विचार से अयोध्या निवासी बड़ी संख्या में राम जी के साथ चल दिये।

श्री राम सीता और लक्ष्मन के साथ अयोध्यावासियों को देखकर प्रभु प्रेम व सानिध्य की महिमा देख कर देवतागण चकित हो रहे हैं।

बिना विश्राम किये सभी लोग श्री राम जी को देखते हुए उनके साथ चल रहे थे। उन्हें थकान नहीं थी। उन्हें छांह और धूप से भी कुछ परवाह नहीं थी। उनके मन में तो बस श्री राम ही बसे हुए थे।

अगले दिन तक २४ कोस चल चुके थे। श्री मणिकुण्डल जी बालक थे उन्होंने श्री राम जी से जगत के ज्ञान को जानने की प्रार्थना की और श्री राम जी इस संसार में क्यों अवतरित हुए हैं। यह भी बताने को कहा साथ ही अन्य बन्धुओं को प्रेरणा देते हुये कहा कि राम जी अवतार पुरूष है हमें उनसे ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

प्रभु राम के साथ अयोध्यावासियों को देखकर देवताओं का धैर्य समाप्त होने लगा। वे सोचने लगे कि भगवान तो भक्तों की भक्ति और प्रेम में बंध जाते हैं। अयोध्यावासी भी उन्हें अपनी प्रेम व भक्ति में बांधे हुये हैं। ऐसे में पृथ्वी से आसुरी ताकतों को नष्ट करने का उद्देश्य (जिस कारण राम ने अवतार लिया है) का क्या होगा ?

देवताओं को चिन्ता को देखकर नारद जी ने कहा कि आप लोग इस अवसर पर विचलित न हो। जो कुछ भी श्री ब्रह्मा जी ने नियत किया है येन केन प्रकारेण सब कुछ वही होगा। आप लोग धैर्य धारण करें।

इस प्रकार श्री राम जी के साथ चलते हुए दो दिन व्यतीत हो गये जो अयोध्यावासी साथ चल रहे थे, उनके मन की बात श्री राम जी जानते थे फिर भी उन्हें उनके मन के विपरीत नहीं कह सके।

प्रभु श्री राम ने निश्चय किया कि इन सभी प्रेमी और भक्तजनों को रात्रि में सोता छोड़ कर अपनी यात्रा को आगे बढ़ाये। जिससे संसार में अवतरित होने (जन्म लेने) का उद्देश्य पूर्ण कर सके। कहने से यह प्रेमीजन दुःखी होंगे।

उन्होंने मन में सोचा यदि इनमें से कोई जग जायेगा तो हमारा साथ नहीं छोड़ेगा अतः उनको जागते में छोड़ कर चलना और कष्ट देना उचित नहीं होगा

अतः श्री राम श्री सीता जी और श्री लक्ष्मण जी आधीरात में ही सो रहे भक्तों को सोता छोड़ कर चल पड़े। राम के बिना सभी जब जागेंगे तब महान आश्चर्य तो होगा ही।

यह सोच कर भगवान श्री राम घने जंगलों की ओर शीघ्रता से चल पड़े। जिससे प्रातःकाल से पहले ही उन सभी को छोड़कर दूर निकल लें। यद्यपि श्री राम का मन उन भक्तों के मन की व्यथा से विचलित हो रहा था, परन्तु संसार के कल्याण के लिये उन्हें दूर जाना पड़ रहा था।

अंधेरी रात थी, कहीं प्रकाश नहीं था। कंकड़ पत्थर गड्ढ़े आदि भी थे। किन्तु कठिनाइयों को सहकर भी श्री राम आगे बढ़ते ही जा रहे थे। श्री सीता जी राजकुल में सभी सुख सुविधाओं के साथ पली थी किन्तु आज वह श्री राम जी और श्री लक्ष्मण जी के साथ ऊँची नींची भूमि पर चली जा रही थी। उन्हें भी आज विश्राम नहीं करना था।

प्रातःकाल उषा की पहली किरण में जब भक्तजन जगे तब तक श्री राम जी दूर निकल गये थे। भक्तों के मन में श्री राम के प्रेम भक्ति और मोह तो था ही, श्री राम के रात्रि में चुपचाप चले जाने से वे सब दुखी थे।

जब उनको ज्ञान हुआ कि श्री राम जी श्री जानकी और श्री लक्ष्मण जी के साथ जा चुके हैं तब कुछ ने अवधपुरी लौटने का मन बनाया तो कुछ ने वहीं रूक जाने का निश्चय किया सभी दुखी होकर रो रहे थे,
निराश हो गये थे तथा कुछ के तो सोचने की शक्ति ही विचलित हो गई थी अर्थात एकाग्रता भंग हो गई थी।

कुछ लोग अयोध्या लौटे तो कुछ कहने लगे हम श्री राम जी को ढूंढेंगे और जहां वह होंगे वही हम कुटी बनाकर रहेंगे। हम आठो दिशाओं में उन्हें ढूंढेंगे। अर्थात् बिना राम के हम अयोध्या वापस नहीं जायेंगे।

कुछ लोग प्रयाग कुछ चित्रकूट तथा कुछ अन्य दिशाओं में राम जी के चरणों का अनुगमन करते हुए चल पड़े। इस प्रकार अपने अपने अनुमान से लोग अलग अलग दिशाओं में राम जी को ढूंढने चल दिये।

अयोध्या वासियों की टोलियां चारों ओर बिखर कर श्री राम जी को ढूढने को निकल पड़ी। श्री मणिकौशल जी भी गंगा जी के किनारे, किनारे काशी तक पहुँच गये।

अयोध्या का वैश्य समाज श्री राम जी को ढूंढते हुए जनकपुरी तक पहुंचा। इस आशा के साथ कि शायद श्री राम जी अपने वनवास के दिनों में प्रवास करते हुये यहीं पर मिल जायें।

वे लोग गया, पाटलीपुत्र, सीतामढ़ी, बिहार आदि अनेक स्थानों पर श्री राम जी को ढूंढते ढूंढते कुछ लोग विभिन्न स्थानों पर ही निवास करने लगे कि उन्हें आशा थी कि वहीं पर शायद एक बार ही प्रभु श्री राम जी उन्हें मिल जायं।

उधर श्री राम चन्द्र जी सीता माँ श्री लक्ष्मण जी चित्रकूट पहुंच चुके थे। उन्हें मन्दाकिनी के सानिध्य में स्फटिक शिला का स्थान बहुत अच्छा लगा। यहीं पर उन्होंने अपना वनवास बिताने का निश्चय किया।

जब अयोध्यावासी चित्रकूट पहुंचे उनकों वहां पर राम लक्ष्मण सीता जी मिल गये तब प्रभु आस्था और प्रभु प्रेम पाकर सभी निहाल हो गये और चित्रकूट में ही रहने लगे।

जब श्री भरत जी प्रभु श्री राम को मनाने चित्रकूट आये तब अवध की प्रजा भी उनके साथ थी। उनके मन में यही अभिलाषा थी कि हम भी प्रभुराम के दर्शन करेंगे परन्तु राम जी के वनवास पूरा करने के निश्चय के कारण यहां आकर वे सब वहीं पर (बुन्देलखण्ड) में ही रहने लगे।

प्रभु के साथ रहने की चाह में मन्दाकिनी नदी के समीपवर्ती जंगलों व पहाड़ों में गर्मी में अत्यधिक गर्मी व सर्दी में अत्यधिक जाड़ा होता है। बरसात में घनघोर अंधेरा कीट पतंगा, सर्प मोर आदि थे परन्तु राम भक्त अयोध्यावासियों ने वहीं पर रहना प्रारम्भ किया और उसे वामदा (वर्तमान बांदा) का नाम दिया।

अनेक टोलियाँ जो मिथिला सहित अन्य दिशाओं में गई थी उनमें श्री मणिकौशल जी सहित कुछ लोग यशपुर तक पहुँचे परन्तु श्री राम जी का पता नहीं लग सका।

अपने माता पिता के साथ श्री मणिकुण्डल जी श्री राम जी की खोज में उत्तर से दक्षिण सभी दिशाओं में गये। उनके हृदय में श्री राम का प्रेम ओजस्वी प्रेरणा बन कर हिलोरे ले रहा था। इस प्रकार वह अनेक लोगों से, कोलभीलों से मिलते हुए पगडंडियों पगडंडियों से श्री राम से मिलने को आतुर होकर चलते ही चले गये।

मणिकौशल जी के साथ चलते हुए रामभक्त वैश्य समाज वेणुगंगा के तीर तक पहुँचा। और श्री राम जी से प्रार्थना करने लगा कि हे श्री राम हमारे मन की व्यथा का हरण करो और हमें अपने दर्शन दो । इस प्रकार यह वैश्य समाज श्री राम को खोजता जा रहा था और व्यापार कर जीवकोपार्जन भी करता जा रहा था, उनका विचार था कि हम सभी कष्ट सहकर भी श्री राम को खोज ही लेंगे क्यों कि राम जी का सानिध्य पाना ही जीवन का उद्देश्य है।

तमाम नगरों ग्रामों में ढूंढने पर भी जब श्री राम नहीं मिले तो मणिकौशल जी दक्षिण भारत के नगरी भौवन नाम के नगर में व्यापार करते हुये रहने लगे। वहीं पर मणिकुण्डल ने यौवनावस्था प्राप्त की।

उन्हें वहां गौतम नाम का एक मित्र मिला जो मृदुभाषी था, परन्तु छल कपट तथा झूठ और पापाचार में लिप्त था और अपने हित के लिये झूठे वर्णन करने में कुशल था। सज्जन लोगों को कष्ट देने में उसे सुख का अनुभव होता था।

मणिकुण्डल जी धर्मात्मा थे, गौतम अधर्मी और द्वेष विचार रखने वाला था। दूसरे देश और नगर में व्यापार करने हेतु छल छदम की मोहक बातों में रिझाकर वह उन्हें अपने साथ चलने को मनाने में सफल हो गया।

मणिकुण्डल जी ने पिता जी से आज्ञा लेकर परदेश में व्यापार करने के लिए चल पड़े, गले लगाकर माता ने आशीर्वाद दिया कि प्रभु श्री राम, सच, सदाचार और उचित वेशभूषा का सदैव ध्यान रखना क्यों कि व्यक्ति के व्यक्तित्व और कृतित्व पर इनका विशेष प्रभाव होता है।

गौतम भी मणिकुण्डल के साथ था वह किसी अवसर की ताक में था कि उन्हें धोखा दे सके। चलते चलते यह लोग नए नगर की ओर पहुंच गये। जो भौतिक सुख सम्पदा से भरपूर था। वहाँ पहुंचकर गौतम अपनी कामुक भावनाओं की तृप्ति हेतु स्थान ढूंढने लगा।

गौतम मणिकुंडल को दुराचरण करने और यौन सुख भोगने की शिक्षा देने लगा। उसने कहा जीवन का असली उद्देश्य तो हर प्रकार के आनन्द लेना ही है।

उसके इस प्रकार के पापपूर्ण गन्दे भाव जान कर के मणिकुण्डल जी आश्चर्य चकित रह गये। वे सोचने लगे कि अपने मित्र को किस प्रकार सत्परामर्श प्रदान करूं। देवतागण सोच रहे थे कि इस मित्रता का परिणाम क्या होगा क्योंकि यह तो केला और बेर की मित्रता है। यह कैसे निभेगी?।

श्री मणिकुण्डल जी ने उससे कहा कि इस संसार में धर्म ही मुख्य जीवन का आधार होता है। सत्य के बिना यह संसार झूठ हैं जिस प्रकार प्राण ही जीवन का आधार है उसी प्रकार धर्म और चरित्र ही श्रेष्ठता का आधार है।

अच्छे और शुभ कर्म करने से जीवन धन्य और महान होता है। पाप कर्म करने से दुःख और शोक की प्राप्ति होती है। वेदों ने भी यही कहा है कि भगवान ने ऐसा ही विधान बनाया है।

इस बात को सुनकर गौतम ने कहा कि किसी भी प्रकार से धन कमाना ही जीवन की जीत है। चाहे वह पाप कर्म के द्वारा ही हो। जिसकी बात में सत्यता होगी उसे ही जीत मिलेगी। इस प्रकार के पाप पुण्य मिथ्या वचन कह कर वह मणिकुण्डल जी को विचलित करने लगा क्यों कि उसका मन धन हरण करने का रहा है।

ऐसा ही हो, कह कर वैश्य श्रेष्ठ श्री मणिकुण्डल जी ने गौतम की शर्त मान ली तथा उपस्थित नगर जनों से ईश्वर (ब्रह्म) के होने का अर्थ प्रतिपादित करने को कहा। परन्तु गौतम ने मूल प्रश्न को बदल कर पूछा और प्रश्न में ही अर्थ का अनर्थ कर दिया जो अन्ततः अनर्थ ही सिद्ध हुआ

गौतम ने प्रश्न का आधार बदला और कहा कि क्या जो सत्य धर्म का पालन करते हुए कष्टमय जीवन यापन करता है वह या वह जो धर्म-अधर्म का बिना विचार किये किसी भी प्रकार से धन-अर्जित करता है वह, इनमें से श्रेष्ठ कौन है? संसार में किसे व्यवहार कुशल और सही माना जाना चाहिए।

उस स्थान पर उपस्थित नगर के लोगों ने उतर दिया कि पहले समय में कुछ आदर्श और सत्यवादी लोग चाहे रहे हों, किन्तु इस समय तो भौतिक सुख सुविधायें पाने के लिए जिस प्रकार धन-धान्य मिल सके उसी उपाय को अपना कर सब कुछ पाना ही , संसार में उपयुक्त माना जा रहा है। अब ईश्वर का सत्य संदेश सभी भूल चुके हैं।

नगर-समाज में लोगों की इस बात को सुनकर गौतम ने कहा कि अब तो मैं जीत गया हूँ। हर प्रकार से मेरी ही जीत हुई है। इस बात को सुनकर सत्यवादी धर्म-परायण श्री मणिकुण्डल ने अपने असत्यवादी छली-कपटी मित्र को अपना सारा धन दे दिया। लोगों ने इस विशाल और उदार हृदय वाले महापुरूष की उदारता को देखा।

श्री मणिकुण्डल जी और गौतम दोनों ही लोग इस नगर से आगे जाने को चल पड़े। अब वह लोग गोदावरी नदी के समीप पहुंच गये, जहां श्री भगवान योगेश्वर का वास था, वहां एकान्त भी था, और विशुद्ध वायु बह रही थी। यहां पहुंच कर कपटी गौतम ने कटुता पूर्वक बातें कहा।

इस एकान्त स्थान पर गौतम ने श्री मणिकुण्डल जी की धन सम्पत्ति तो छीन ही ली उन्हें घायल भी कर दिया। उनके अंग-प्रत्यंग चोट से जख्मी कर दिये, और अनेक प्रकार से विवाद करके मित्रता का व्यवहार छोड़ कर अकेले मित्र को कष्ट में डाल कर-चला गया।

उसी स्थान से थोड़ी दूर पर श्री विष्णु जी के योगिराज स्वरुप का भव्य मन्दिर था, यह अवसर अगहन के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन का था जिसे श्री गीता जयन्ती तथा मोक्षदा एकादशी भी कहते हैं इस स्थान के दर्शन की इच्छा देवताओं और ऋषि मुनियों में सदैव रहती है। पुराणों में वर्णित यह स्थान चक्षुस्तीर्थ था, जिसके महत्व का ऋषि मुनियों ने अनेक प्रकार वर्णन किया है। इस स्थान की यात्रा करने और पवित्रता पूर्वक साधना करने वाले को नेत्र ज्योति प्राप्त होती है, जीवन और स्वास्थ्य मिलता है तथा यश एवं वैभव की उपलब्धि होती है। इस पवित्र स्थान का दर्शन मात्र ही अनेक पुण्यों का देने वाला है तथा गौदान के समान फल प्रदान करता है।

युवराज वैभीषणि गौतमी गंगा के तट पर, श्री मणिकुण्डल जी को क्षत-विक्षत देखकर पूछते हैं कि आपको यह घाव और चोट किस प्रकार लगी है। आप का परिचय क्या है। इस प्रेम पूर्वक व्यवहार से स्नेह का द्रावण गंगा जल के समान ही हो गया। श्री मणिकुण्डल जी ने उत्तर दिया कि मैं अयोध्या में निवास करने वाला वैश्य एवं श्री राम का भक्त हूँ। मेरे हृदय में श्री राम जी का निवास है। मैं निरन्तर हर कदम पर उन्हीं श्री राम को ढूंढ़ रहा हूँ जो धर्म, सत्य और विश्वास में रमे हुए हैं। मैं अपने को श्री राम का सेवक मानता हूँ।

इस उत्तर को सुनकर और भक्ति भावना को देखकर विभीषण जी के मन को सुख शान्ति प्राप्त हुई, उन्होंने तत्काल श्री मणिकुण्डल जी के घायल शरीर से सभी दुःख दर्द मिटाने वाले उपाय किये, विशल्यकरणी औषधि (जो हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी हेतु पर्वत ले जाते समय पर्वत से वहां पर गिर गई थी) और मंत्र के प्रयोग से रोग से मुक्ति दिला दी तथा स्वस्थ सुन्दर-कान्तिमयी शरीर की सुन्दरता को प्रदान कर दिया।

अपने शरीर से सभी रोगों तथा दुख-दर्दों को दूर होने तथा सर्वांग सुन्दर रूप पुनः पाया देख कर मणिकुण्डल आश्चर्य चकित हो गये। यह ईश्वर की कृपा का चमत्कार और उन्हीं परम पिता परमेश्वर की इच्छा का परिणाम ही है, ऐसा मानकर उन्होंने प्रतिज्ञा की, कि अब मैं सदैव ही श्री हरि (विष्णु) जी का सेवा परायण होकर सत्संग करता रहूँगा। विभीषण से यह जानकारी प्राप्त होने पर कि प्रभु राम वनवास पूर्ण कर अयोध्या का राजसिंहासन संभाल चुके हैं मणिकुण्डल ने राम के दर्शन करने का मन में संकल्प लिया।

श्री मणिकुण्डल जी ने उत्तर और दक्षिण में देश की एकता का पावन प्रसंग देखा, और समूचे राष्ट्र की एकता को मजबूत करने का विचार किया। उन्होंने इसका आधार श्री राम के विष्णु रुप में स्थापित पाया।

श्री शंकर जी ने संसार को ध्यान योग की विधि आनन्दित होकर प्रदान की है। जिससे सम्पूर्ण संसार आनन्दित हो सके श्री मणिकुण्डल जी ने इसी ध्यान योग का अभ्यास करके अपने तन और मन के शोक, भय और चिन्ता-तनाव आदि विकार दूर कर लिया।

दूसरों की भलाई करना ही अपना धर्म समझ कर तथा संकल्प लेकर वह महाबली नामक राजा के राज्य महापुर में जा पहुंचे। वहां की राजकुमारी अत्यधिक बीमार एवं कष्टमय स्थिति में थी।

वहां उस राज्य में ऊँचे-ऊँचे भवन और अट्टालिकायें बनी हुई थी, स्वच्छा जल के कुंए थे, सभी नगरवासी सुखी और प्रसन्न थे। इस नगर में गौ सेवा का धर्म था। सभी नगरवासी सुन्दर वस्त्रों और आभूषणों से सुसज्जित थे। इस दृश्य को देखकर श्री मणिकुण्डल जी के मन में खुशी का संचार हुआ।

वह राजभवन में भी गये। जहां राजकुमारी को बीमार देखा उसकी स्थिति मृत्यु के समीप थी, अपार कष्ट था। उसकी चिकित्सा और स्वास्थ्य के लिए देवताओं को प्रसन्न करने वाले मंत्र तथा औषधियों की जरूरत थी। अतः उन्होंने विरक्तभाव से साधना प्रारम्भ कर दी।

ज्योतिष योग के अनुसार उस बीमार राजकुमारी के ग्रह नक्षत्र अनुकूल नहीं थे। सिंह राशि पर शनि की साढ़े साती का वास था, सभी ग्रह बक्री थे। सूर्य पुत्र शनि देव को प्रसन्न करने से ही यह कष्ट दूर हो सकते थे। संयोग से आज शनिग्रह की विपरीतता समाप्त हो रही थी। और सिंह राशि वाले (मणिकुण्डल व महारूपा) पर शनि ग्रह भी कल्याणकारी हो रहे थे।

श्री मणिकुण्डल जी ने इन सभी बुरे ग्रह दोष और रोग लक्षणों को देख कर रोगिणी की सेवा सुश्रुपा प्रारम्भ कर दी। दवाइयों और मंत्रों से अपने हृदय के प्रेम और नेम से उन्होंने रोग के वेग को रोक लिया तथा राजकुमारी महारूपा को स्वस्थ कर दिया।

महरूपा नाम की उस राजकुमारी की जन्म से ही आंखों में रोशनी नहीं थी और अनेक शारीरिक और मानसिक व्याधियाँ उसको घेरे हुई थी। श्री मणिकुण्डल जी के प्रयत्न से उसकी जन्मान्ध दोष तथा सभी व्याधियाँ समाप्त हो गई। राज्य भर में उनके यश का बखान होने लगा।

उस राजकुमारी की आंखों में रोशनी का संचार हो गया। वह सभी प्रकार के रंगों का दर्शन करने लगी, इस भिन्न भिन्न प्रकार के सौन्दर्य को देखकर उसे संसार में चमत्कार तथा अदभुत आनन्द का सुख मिला। पहले वह अपने जीवन से निराश थी, अब उसे आशा का नया सवेरा मिल गया।

उस राज्य के राजा का नाम महाबली था। उसकी घोषणा थी कि जो राजकुमारी की बीमारी दूर करके उसे स्वस्थ कर देगा उसे आधा राजपाट दे दिया जायेगा। इसी प्रतिज्ञा के कारण श्री मणिकुण्डल जी को आधा राज्य देने की घोषणा की गई किन्तु उन्होंने विन्नमता पूर्वक इसे स्वीकार करने से मना कर दिया।

मणिकुण्डल के परोपकारी एवं निर्लोभी व्यक्तित्व से प्रभावित होकर राजा के मन में आदर भाव बढ़ गया अतः महाबली ने पूरा राज्य उन्हें दे दिया। मणिकुण्डल जी ने इसे श्री रामचन्द्र जी, और श्री हनुमान जी की कृपा के रूप में स्वीकार किया।

राज कुमारी महारुपा ने श्री मणिकुण्डल जी से निवेदन किया कि यह जीवन आपका ही दिया हुआ है। आप जल का सागर और मैं मछली के समान हूँ अतः आपके बिना मेरा जीना सम्भव नहीं है अतः मुझे अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लें

महाराजा मणिकुण्डल ने भौवन नगर में निवास कर रहे माता पिता को भी महापुर बुलवा लिया। उनके उत्तम कार्यों से माता पिता को भी सम्मान प्राप्त हुआ। वह यशस्वी बने और उन्हें भी राजसी सुख प्राप्त हुये।

राजा बनकर मणिकुण्डल जी शासन करने लगे और जनता के लिए कल्याणकारी काम भी करने लगे, किन्तु मन में श्रीरामचन्द्र जी एवं सीता जी के दर्शन की लालसा और भी बलवती होने लगी। उन्होंने श्री राम - सीता के दर्शन हेतु अयोध्या जी जाने का निश्चय किया।

महापुरी से रानी महारुपा के साथ श्री मणिकुण्डल जी अयोध्यापुरी के लिए चल दिये। रास्ते में सप्तश्रृंग आश्रम गये। जहां विनम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोड़कर, रथ से उतर कर प्रार्थना-अर्चना की।

उन्होंने रामटेक की घाटियों और शिखरों को प्रणाम करते हुए नतमस्तक होकर श्री राम के चरणों से पवित्र हुई धूल को धारण किया और अनुभव किया कि श्री रामचन्द्र जी का वरदान प्राप्त हो रहा है।

सिवनी का जंगल पार करके नर्मदा जी के समीप पुहंचे। भेड़ा घाट का झरना, देख कर मन में उल्लास और अधीरता का अनुभव हुआ। प्राकृतिक लीला और झरने का जल उन्हें आत्मा का अनन्त आनन्द प्रदान कर रहा था। आगे चलते हुए वह मैहर, शरभंगा, सिद्ध पहाड़ का दर्शन करते हुए चित्रकूट पहुंचे जिसे श्रीराम की तपोभूमि होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

चित्रकूट में मन्दाकिनी जी में स्नान किया और गुप्त गोदावरी के पवित्र जल का स्पर्श किया। तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले कामदगिरि की परिक्रमा की और वहाँ श्रीराम जी से जुड़े हर स्थल को नमन कर तथा हर प्रकार से याद करके अपने जन्म को सफल बनाया।

अब चित्रकूट से आगे बढ़ते हुए कई बस्तियों में गये । वहाँ पर अयोध्यावासियों के झुण्ड के झुण्ड निवास करते मिले। वामदा (वर्तमान नाम बांदा) में तो हजारो अयोध्यावासी वैश्य परिवार के पूर्व परिचित बचपन के अभिन्न मित्रों से मुलाकात हुई।

वहां से आगे चलते हुए संसार में प्राणि मात्र का कल्याण करने की इच्छा रखने वाले मणिकुण्डल जी श्री यमुना नदी को पत्नी सहित नाव से पार करके ब्रह्मावर्त (वर्तमान नाम बिठूर) पहुचें। जहां बाल्मीकि जी की तपस्थली व ब्रह्म खूंटी हैं।

उन्होंने अपनी यात्रा को आगे जारी रखते हुए भगवान लोथेश्वर का अभिषेक किया पारिजात वृक्ष का दर्शन किया। बोरलिया में नतमस्तक हुए और चारों ओर भक्ति पूर्वक श्री रामजी की छटा के दर्शन करते हुए अयोध्या जी की ओर पुनः बढ़ चले।

रास्ते में बसन्त ऋतु की सुहावनी छटा का अवलोकन करते हुए आगे बढ़ रहे थे। चारों ओर हरियाली और खुशहाली फैली हुई थी। चन्दन से सुरभित वायु जब आम के बौरों को छूकर तन मन और आत्मा को आनन्दित करती थी ऐसे मनमोहक वातावरण में बालवृद्ध सभी प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

संसार में पशु पक्षी और मनुष्य सभी को श्री राम के देव लोक का आभास प्राप्त हो रहा था। सुबह होने की सूचना मुर्गे की बांग से मिल रही थी। चिड़िया चहक रही थी। सूर्य चन्द्र का प्रकाश संसार में जीवन का संचार कर रहा था। और यह सब इतने स्वाभाविक रूप से हो रहा था कि प्रभु श्री राम यहीं कहीं विराजमान है यही आभास हो रहा था।

मणिकुण्डल जी अब अयोध्या जी में आ चुकें है। अपने पैतृक निवास में पहुँच चुके हैं, पड़ोसी लोग चारों ओर से घेर कर कहते हैं यह बहुत ही आनन्दमय है कि बहुत समय के बाद तुम पहली बार अयोध्या आये हो।

अब महारानी महरूपा के साथ कीमती भेंट लेकर श्री राम से मिलने के अयोध्यावासियों के साथ रामदरबार की ओर चल पड़े।

श्री राम जी के दरबार में मणिकुण्डल जी के साथ अनेक भक्त दर्शन करने के लिए पहुंच चुके हैं। श्री मणिकुण्डल जी अपनी पत्नी के साथ श्री राम चन्द्र जी के चरणों में नत् मस्तक हाकर दण्डवत एवं प्रणाम करने लगे। मणिकुण्डल का भक्तिभाव देखकर प्रभु श्री राम व सीता को हृदय में अनन्त सुख और आनन्द का अनुभव हुआ।

श्री राम जी से मणिकुण्डल जी ने कहा कि आपके रात्रि में ही चले जाने पर हम सब सुबह बहुत दुखी हुए। आपके दर्शन पाने के लिए हम जंगलों और नगरों में ढूंढते रहे। किन्तु आप का दर्शन आज बहुत समय बाद हो रहा है हम धन्य हो गये हैं। श्री राम जी क्या हमारी याद भी आप को आई थी?

तीनों लोक के स्वामी श्री राम ने गले से मिल कर मणिकुण्डल महाराज को अब चक्रवर्ती सम्राट होने का आभास करा दिया है। देवता भी इस रहस्य को नहीं जान सके।

महारानी महारुपा को माता सीता जी आशीर्वाद दे रही हैं। वह कहती हैं, तुम्हारा सुख सौभाग्य सदैव बना रहे, तुम्हारे पुत्र गुणवान हो चार सौ युगों तक तुम्हारी कीर्ति संसार में व्याप्त होती रहे।

श्री लक्ष्मण जी, उर्मिला माण्डवी भरत और श्री हनुमान जी तथा श्रुति कीर्ति शत्रुघ्न एवं गुरू वशिष्ठ जी का सम्मान करते हुये दोनों पति पत्नी सभी को प्रणाम कर रहे हैं।

मणिकुण्डल ! कलियुग में आप के वंशज अनेक मन्दिर बनवा पूजा अर्चना करेंगे, जन्म दिवस में पूजन करेंगे, ध्यान लगाकर मन में ध्यान और धारणा करेंगे, पौष मास की पूरन मासी को व्रत करेंगे तो उन्हें श्री राम की कृपा प्राप्त होगी

श्री हनुमान जी कह रहे हैं कि जिसके मन में श्री राम चन्द्र जी का निवास होता है हम उसकी सदैव रक्षा करते हैं। आप श्री रामचन्द्र जी की भक्ति पूर्वक गुणगान करते हैं अतएव सदैव आप के वंशज भी सुखी होंगे। जो लोग मणिकुण्डल जी का व्रत करेंगे उन्हें मन वांछित फल प्राप्त होगा। यश, धन, विद्या, पुत्र भी प्राप्त होंगे, राम जी और श्री हनुमान जी की कृपा उन्हें सदैव प्राप्त होगी।

राजगुरू महर्षि वशिष्ठ जी ने भविष्यवाणी करते हुए कहा कि श्री मणिकुण्डल जी की जन्म स्थली पर कलियुग में हनुमान गढ़ी के निकट श्री अयोध्या जी के वणिक मन्दिर का निर्माण करवायेंगे।

यदि कोई अपने घर में आप की प्रतिमा की स्थापना करेगा तो वहां के वास्तुदोष दूर हो जायेंगे। मणि कुण्डल कवच धारण करेगा तो उसके सभी रूके हुये काम पूरे हो जायेंगे। आपकी आरती करने वालों को शक्ति और सम्पन्नता प्राप्त होगी। हृदय में भक्ति जाग्रत होगी।

इसी प्रकार के अनेकों आशीर्वाद सभी प्रमुख जनों के द्वारा श्री मणिकुण्डल जी को प्राप्त हुए। मणिकुण्डल जी ने हृदय में मंगलभावना करते हुए पुनः सब को प्रणाम किया और श्री सीताराम जी के पैरों पर शीश रख कर प्रणाम किया।

प्रभु श्री राम से विदा लेकर मणिकुण्डल जी वापस महापुर आ गये और राज्य का कार्य संभालने लगे। मणि और माणिक नामक इनके दो पुत्र हुये।

मणिकुण्डल जी ने साहित्य धर्म संगत शासन करते हुये राज्य में खेल, साहित्य, विज्ञान, सैन्यशक्ति की उन्नति का ध्यान रखा। उनके राज्य में प्रजा खुशहाल थी।

इस प्रकार प्रभु श्री राम के वनवास के समय मणिकौशल एवं मणिकुण्डल जी के नेतृत्व में अयोध्या से चले नगरवासी पूरे देश में निवास करने लगे। इन अयोध्यावासियों ने विशेषकर उ० प्र० के साथ साथ बिहार, म० प्र० महाराष्ट्र, गुजरात एवं आन्ध्रप्रदेश में रामभक्ति का प्रचार प्रसार किया। महापुर के राजा बनने के पश्चात् मणिकुण्डल जी ने अयोध्या आकर रामदर्शन किये थे जिस पर उन्हें आशीर्वाद प्राप्त हुआ था कि उनके वंशज उनका स्मरण कर यश वैभव की प्राप्ति करेंगे तथा कलयुग में मणिकुण्डल जी के अनुयायी सदैव समृद्ध एवं खुशहाल रहेंगे। सम्प्रति एक करोड़ जनसंख्या वाले अयोध्यावासी वैश्य समाज पूरे देश में (कुछ लोग विदेश में भी) निवास करता है।